



Original Article

हिंदी सिनेमा और समाज

प्रो. डॉ. पंडित बन्ने

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग

भारत महाविद्यालय, जेऊर (म.रेल), तह.करमाला, जि.सोलापुर (महाराष्ट्र)

Manuscript ID:

IJAAR-C130304

ISSN: 2347-7075

Impact Factor – 8.141

Volume - 13

Issue - 3

January – February 2026

Pp. 15 - 17

Submitted: 16 Jan.2026

Revised: 20 Jan. 2026

Accepted: 10 Feb. 2026

Published: 10 Feb. 2026

Corresponding Author:

प्रो. डॉ. पंडित बन्ने

Quick Response Code:



Website: <https://ijaar.co.in/>



DOI: 10.5281/zenodo.22774589

DOI Link:

<https://doi.org/10.5281/zenodo.22774589>



Creative Commons



सार:

सिनेमा में साहित्य और संस्कृति, ज्ञान और विज्ञान, आदर्श और यथार्थ, संगीत और सौंदर्य, अभिनय और कला का अद्भुत समन्वय है। आज यह अभिव्यक्ति का प्रभावी माध्यम बन चुका है जो सभी उम्र के लोगों को सोचने पर मजबूर कर रहा है। सिनेमा, अन्याय, अछूतोद्धार, नारी, जागरण, राष्ट्रीय एकता, शोषण, भाषावाद, क्षेत्रवाद, सांप्रदायवाद और जातिवाद जैसी सामाजिक समस्याओं को विषय बनाकर लोगों को जागृत करने का प्रयास कर रहा है। हिंदी सिनेमा सिर्फ भारत बल्कि विश्व का सबसे बड़ा उद्योग जगत है। प्रवासी भारतीय इसके बहुत बड़े दर्शक हैं। सिनेमा अपने आरंभ से ही मनुष्य के कौतुक, आकर्षण जिज्ञासा और मनोरंजन का विषय रहा है। वैश्वीकरण के बढ़ते प्रभाव के कारण हिंदी सिनेमा में प्रवासी भारतीयों को भी केंद्र में रखकर उनके प्रेम व पारिवारिक रिश्तों का ताना – बुना जाने लगा।

मुख्य शब्द: सिनेमा, साहित्य, संस्कृति, भारतीय, सामाजिक, विश्व, मनोरंजन, जनसंचार, प्रवासी, अभिव्यक्ति।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.

How to cite this article:

प्रो. डॉ. पंडित बन्ने. (2026). हिंदी सिनेमा और समाज. *International Journal of Advance and Applied Research*, 13(3), 15 – 17. <https://doi.org/10.5281/zenodo.22774589>

प्रस्तावना:

हिंदी सिनेमा का प्रारंभ 1913 से माना जाता है। उस समय हिंदी सिनेमा में केवल चित्र दिखाए जाते थे। इस सिनेमा में ध्वनि का अभाव था। सबसे पहले बनी फिल्म का शीर्षक हिंदी पौराणिक आख्यान 'राजा हरिश्चंद्र' को लेकर था। इसे

पहली हिंदी फिल्म माना जाता है। इस युग में धार्मिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और राजनैतिक फिल्मों का निर्माण भी शुरू हुआ। 1917 में 23 धार्मिक फिल्मों का निर्माण हुआ। यह सभी चलचित्र दादासाहब फालके द्वारा निर्मित हुए। 'सत्यवान सावित्री', 'कृष्ण जन्म', 'भस्मासुर मोहनी', 'लंका



दहन', आदि जैसी सिनेमा पौराणिक धार्मिक आख्यानों पर आधार थीं I 1913 से लेकर 1925 तक देखे तो तत्कालीन सिनेमा पर 'पारसी थियेटर' का प्रभाव दिखाई देता है I सिनेमा का मुख्य उद्देश मनोरंजन था I

सिनेमा एक दृश्य माध्यम है I सिनेमा जनसंचार का एक सशक्त कलात्मक माध्यम है I सिनेमा एक संयुक्त आर्ट है क्योंकि यह एक सम्मिलित प्रयोग है I एक समूह की सृजनात्मक इसके निर्माण से जुड़े हैं I

मूक फिल्मों का दौर 1931 में 'आलमआरा' के आगमन से खत्म हुआ I प्रथम पूर्ण रंगीन फिल्म 'किसान कन्या' (1937) में प्रदर्शित हुई I 1933 में भारतीय फिल्मों की रजत जयंती मनायी गई I 1943 में प्रदर्शित 'किस्मत' फिल्म का 'दूर हटो ए दुनिया वालों हिंदुस्तान हमारा है' यह गाना राष्ट्रीय भावनाओं को अभिव्यक्त किया जाने लगा I

आजादी के पश्चात भारतीय सिनेमा पर व्यावसायिकता हवी होती जा रही है I वी.शांताराम, महबूब, विमलराय जैसे फिल्मकारों ने भारतीय सिनेमा को सार्थक दिशा दी I 1951 में राजकुमार की 'आवारा', विमलराय की 'दो बिधा जमीन' आदि फिल्मों ने दर्शकों पर अद्भुत प्रभाव डाला I मोहराब मोदी की मिर्जा गालिब (1954) राष्ट्रपति का स्वर्णपदक पाने वाली पहली फिल्म थी I ये सभी सिनेमा हिंदी की सर्वाधिक मुनाफा कमानेवाली फिल्मों में शामिल है I 1986 के बाद यश चोपड़ा, सुभाष घई, राजकुमार संतोषी, रामगोपाल वर्मा आदि ने व्यावसायिक फिल्मों का निर्माण किया I

सिनेमा नाटक का ही विकसित रूप है I नाटक रंगमंच अथवा सिनेमा के माध्यम से प्रस्तुत किया जा सकता है I पारसी रंगमंच पर खेले गए नाटकों की नींव पर भारतीय सिनेमा विकसित हुआ I पारस रंगमंच पर खेले गए नाटकों के

निर्माता, अभिनेता और गायक बन गए हैं I वस्तुतः आज जिसे हम सिनेमा से जानते हैं वह बहुत वह बहुत कुछ रूप से रंगमंच, लोकनृत्यों, लोकनाट्यों से गुजरते हम तक पहुँचने वाली एक ऐसी शैली है जिसने आज यांत्रिकता के विभिन्न उपादानों का रूप पाकर कला का रूप धारण कर लिया है I

सिनेमा और रंगमंच की संस्कृति, सौंदर्यशास्त्र आपसी रिश्ते आदि स्वयं में एक रोमांचक और सर्जनात्मक अनुभव है I रतनकुमार पाण्डेय के अनुसार – “फिल्म और नाटक चाक्षुष और वैचारिक माध्यम है I इसी कारण एक अच्छी फिल्म या अच्छा नाटक दर्शक से हमेशा कुछ कहता है, कहानी के अलावा भी बहुत कुछ देता है, बोलता है I दोनों का हर दृश्य – बंध, हर स्थिति, हर – प्रसंग और प्रत्येक मोड़ विश्वसनीय बने यह निर्देशक और उस माध्यम की भाषा पर भी निर्भर करता है I वह सर्जनात्मक भाषा है जो ऊपरी भाषा के बंधन से फिल्म और रंगमंच को आजाद कर देती है I”¹

फिल्म निर्देशक का माध्यम होती है और रंगमंच अभिनेता का I फिल्म में अभिनेता के साथ बहुत से उपादानों की भूमिका रहती है I सिनेमा में मुख्य रूप में निर्देशक, कैमरे की आँख है I दर्शक निर्देशक की कल्पना को कैमरे की आँख से ही देखता है I रंगमंच अपने आप में स्वायत्त है I रंगमंच संघर्ष की माँग रखता है I सिनेमा नाटकीयता को तोड़ती है I रंगमंच नाटकीयता को सृजन करता है I

हिंदी में सिनेमा पत्रकारिता की ठोस परंपरा नहीं रही I 'दिनमान', 'धर्मयुग', 'माधुरी' और हिंदुस्तान पत्रिकाओं में कवियों और साहित्यकारों ने सिनेमा पर लिखा I उन्होंने साहित्य के विश्लेषण के हथियारों से फिल्मों का विश्लेषण किया I “हिंदी की फिल्म पत्रकारिता ने कला और समांतर



सिनेमा को श्रेष्ठ सिनेमा मानने की संकीर्णता दिखाकर पॉप्युलर फिल्मों से किनारा कर लिया। ऐसे फिल्म आलोचकों, समीक्षकों और लेखकों की जमात आज भी सक्रिय है। वे एक – दूसरे की तारीफ कर फिल्म पत्रकारिता और लेखन को एक दूसरे गर्त में ले जा रहे हैं।^{1,2}

हिंदी सिनेमा में भारतीय समाज, संस्कृति और जीवन की विविधताओं को दर्शाता है। आज हिंदी सिनेमा सीमाओं को पार कर आंतरराष्ट्रीय दर्शकों को भी आकर्षित कर रही है। साहित्य और सिनेमा की ताकत बहुत बड़ी है। साहित्य, सिनेमा और समाज एक दूसरे से अभिन्ना रूप से जुड़े हैं। आज के विज्ञान और तकनीकी युग में भी साहित्य का महत्व कम नहीं हुआ है। “साहित्य की तरह फिल्में भी किसी भी देश विशेष तक सीमित नहीं रहती बल्कि पूरी मनुष्य जाति का प्रतिनिधित्व करती हैं।”³

साहित्यिक कृतियों को आधार बनाकर बहुत सी फिल्मों का निर्माण हुआ है। सिनेमा के लिए अच्छे माल की सप्लाई साहित्य से होती है। साहित्य उद्देश्यपूर्ण होता है। “आजादी के बाद भारतीय सिनेमा में साहित्यिक कृतियों पर आधारित फिल्मों के निर्माण की एक सदृढ़ परंपरा मिलती है।”⁴ हिंदी सिनेमा ही भारतीय सिनेमा का प्रतिनिधित्व करता है। सिनेमा समाज में कितना सशक्त माध्यम सिद्ध हो रहा है जिसका प्रभाव जनमानस पर शीघ्रता से पड़ता है।

निष्कर्ष:

आज भारत में फिल्म निर्माण एक महत्वपूर्ण उद्योग है। सिनेमा मनुष्य की मूल प्रवृत्ति को छुनेवाला माध्यम है।

साहित्य और सिनेमा दोनों समाज के अभिन्न अंग हैं। सिनेमा का मुख्य उद्देश्य समाज को खुश करना होता है। हिंदी फिल्मों के दर्शक सिर्फ भारतीय ही नहीं, विदेशों में भी हिंदी फिल्म पसंद करते हैं। हिंदी फिल्मों का आज बड़ा बाजार है। आज सभी पत्र – पत्रिकाओं में फिल्मों का स्थान सुनिश्चित है। फिल्म लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा है। सिनेमा ने आधुनिक सामाजिक मूल्यों, आधुनिक वैचारिकी और कलात्मक सुरुचि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। सिनेमा और साहित्य, समाज में घटित घटनाओं और जीवन का एक आईना होता है। साहित्य का विकसित रूप ही आज सिनेमा के नाम से जाना जाता है। हिंदी सिनेमा और साहित्य भारतीय पहचान और भाषा के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सिनेमा का माध्यम से साहित्य को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने की क्षमती होती है।

संदर्भ ग्रंथ:

1. सिनेमा समकालीन सिनेमा – अजय ब्रह्मात्मज, (भूमिका) से, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2012
2. अनभै (पत्रिका) सं.रतनकुमार पांडेय, अप्रैल – जून, 2009, पृ. 22, मुंबई
3. सिनेमा वक्त के आइने में – राजेंद्र सहगल, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली, सं.2011, पृ. 86
4. आनंद प्रकाशन, कोलकता – हिमांशु, सं.2017, पृ. पुस्तक अवलोकन से